अथवा

(ब) सुधाकरं वार्धकतः क्षपायाः संप्रेक्ष्य मूर्द्धानमिवानमन्तम्।
तद्विप्लवायेव सरोजिनीनां स्मितोन्मुखं पङ्कजवक्त्रमासीत्॥

5. निम्नलिखित में से किसी **एक** श्लोक की व्याख्या संस्कृत भाषा में कीजिए :

(अ) मधुस्फीता वाचः परममृतं निर्मितवत-
स्तव ब्रह्मन्किं वागपि सुरगुरोर्विस्मयपदम्।
मम त्वेतां वाणीं गुणकथनपुण्येन भवतः
पुनामीत्यर्थेऽस्मिन्पुरमथनबुद्धिर्व्यवसिता॥

अथवा

(ब) श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचराः
चिताभस्मालेपः स्रगपि नृकरोटीपरिकरः
अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं
तथापि स्मर्तृणां वरद परमं मङ्गलमसि॥

6. कादम्बरी में अलंकार योजना का वर्णन कीजिए।

7. 'कादम्बरी रसज्ञानामाहारोऽपि न रोचते' इस पंक्ति की समीक्षा कीजिए।

8. शिशुपालवधम् द्वितीय सर्ग के 'माघे सन्ति त्रयो गुणाः' इस पंक्ति की व्याख्या कीजिए।

9. शिवमहिम्नः स्तोत्र के आधार पर शिव के दार्शनिक स्वरूप का वर्णन कीजिए।

MASA–05

December – Examination 2021

M.A. (Final) Examination

SANSKRIT

गद्य तथा काव्य

Paper : MASA-05

Time : 1½ Hours] [*Maximum Marks : **80***

निर्देश :- यह प्रश्न-पत्र 'अ' और 'ब' दो खण्डों में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड के निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खण्ड—अ **4×4=16**

(अति लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को प्रश्नानुसार एक वाक्य, एक शब्द या अधिकतम **30** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 4 अंकों का है।

1. (i) कथा किसे कहते हैं ?

(ii) कादम्बरी किस कोटि की नायिका है ?

(iii) अभिनव बाण किसे कहा जाता है ?

(iv) 'शिशुपालवधम्' के किस सर्ग को मन्त्रवर्णन कहा जाता है ?

(v) 'विक्रमांकदेवचरितम्' का मुख्य रस क्या है ?

(vi) 'विक्रमांकदेवचरितम्' के अनुसार चालुक्यवंश की उत्पत्ति किससे मानी है ?

(vii) 'विक्रमांकदेवचरितम्' के अनुसार राजा सत्याश्रय किसके लिए प्रसिद्ध था ?

(viii) 'शिवमहिम्नः स्तोत्रम्' किस छन्द में निबद्ध है ?

खण्ड—ब **4×16=64**

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को अधिकतम **200** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 16 अंकों का है।

2. निम्नलिखित में से किसी **एक** गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या हिन्दी भाषा में कीजिए :

नाम्नैव यो निर्भिन्नारातिहृदयो विरचितनारसिंहरूपाडम्बरम्, एकविक्रमाक्रान्तसकलभुवनतलो विक्रमत्रयायासितभुवनत्रयं जहासेव वासुदेवम्। अतिचिरकाललग्नमतिक्रान्तकुनृपतिसहस्रसम्पर्क-कलङ्कमिव क्षालयन्ती यस्य विमले कृपाणधाराजले चिरमुवास राजलक्ष्मीः।

अथवा

प्रेताधिपनगरीव सदासन्निहितमृत्युभीषणा महिषाधिष्ठिता च, समरोद्यतपताकिनीव बाणासनारोपितशिलीमुखा विमुक्त-सिंहनादा च, कात्यायनीव प्रचलितखड्गभीषणा रक्तचन्दनालङ्कृता च, कर्णीसुतकथेव सन्निहित—विपुलाचला शशोपगता च, कल्पान्तप्रदोषसन्ध्येव प्रनृत्यन्नीलकण्ठा पल्लवारुणा च, अमृतमथनवेलेव श्रीद्रुमोपशोभिता वारुणी—परिगता च, प्रावृडिव घनश्यामला अनेकशतह्रदालङ्कृता च।

3. निम्नलिखित में से किसी **एक** श्लोक की सप्रसंग व्याख्या हिन्दी भाषा में कीजिए :

(अ) रत्नस्तम्भेषु संक्रान्तप्रतिमास्ते चकाषिरे।
एकाकिनोऽपि परितः पौरुषेयवृता इव॥

अथवा

(ब) बृहत्सहायः कार्यान्तं क्षोदीयानपि गच्छति।
सम्भूयांभोधिमभ्येति महानद्या नगापगा॥

4. निम्नलिखित में से किसी **एक** श्लोक की व्याख्या हिन्दी भाषा में कीजिए :

(अ) श्रीधाम्नि दुग्धोदधिपुण्डरीके यश्चञ्चरीकद्युतिमातनोति।
नीलोत्पलश्यामलदेहकान्तिः स वोस्तु भूत्यै भगवान्मुकुन्दः॥